

रविवार 20 अक्टूबर, 2019

विषय — प्रायश्चित का सिद्धांत

स्वर्ण पाठ: गलातियों 3 : 26

---

"क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।"

---

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 51 : 1, 2, 6, 7, 10-12

- 1 हे परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझे पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।
- 2 मुझे भलीं भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छोड़ाकर मुझे शुद्ध कर!
- 6 देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।
- 7 जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा; मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा।
- 10 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
- 11 मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।
- 12 अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल॥

## पाठ उपदेश

### बाइबल

#### 1. मत्ती 3 : 16, 17

- 16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा।
- 17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ॥

## 2. मत्ती 5 : 1, 2, 8, 16

- 1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।  
2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,  
8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।  
16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥

## 3. मत्ती 16 : 21-27

- 21 उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं; और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं।  
22 इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा कि हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा।  
23 उस ने फिरकर पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो: तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।  
24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।  
25 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।  
26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?  
27 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।

## 4. मत्ती 23 : 1-12

- 1 तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा।  
2 शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं।  
3 इसलिये वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उन के से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।  
4 वे एक ऐसे भारी बोझ को जिन को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते।

- 5 वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं: वे अपने तावीजों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की को रें बढ़ाते हैं।
- 6 जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें, और सभा में मुख्य मुख्य आसन।
- 7 और बाजारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है।
- 8 परन्तु, तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है: और तुम सब भाई हो।
- 9 और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।
- 10 और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह।
- 11 जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने।
- 12 जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा॥

## 5. मत्ती 26 : 1, 2, 17-20, 26, 27

- 1 जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा।
- 2 तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसह का पर्व होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।
- 17 अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन, चले यीशु के पास आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?
- 18 उस ने कहा, नगर में फुलाने के पास जाकर उस से कहो, कि गुरु कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां पर्व मनाऊंगा।
- 19 सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया।
- 20 जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिये बैठा।
- 26 उस ने उस से कहा, तू कह चुका: जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांग कर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है।
- 27 फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ।

## 6. II कुरिन्थियों 6 : 1, 4-7

- 1 और हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो।
- 4 परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों की नाई अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दिरद्रता से, संकटों से।
- 5 कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लड़ों से, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से।
- 6 पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से।
- 7 सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ से; धार्मिकता के हथियारों से जो दाहिने, बाएं हैं।

## 7. रोमियो 5 : 1-5, 8-11

- 1 सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।
- 2 जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।
- 3 केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज।
- 4 ओर धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।
- 5 और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।
- 8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।
- 9 सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?
- 10 क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?
- 11 और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं॥

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 18 : 3-9

नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं। उनका मिशन व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों था। उन्होंने जीवन का काम न केवल स्वयं के प्रति न्याय में, बल्कि मनुष्यों पर दया करने में भी किया।

### 2. 19 : 1-2, 6-11

इसलिए मसीह का उद्देश्य था मनुष्य को ईश्वर से मिलाना, न कि ईश्वर को मनुष्य। ... यीशु ने मनुष्य को ईश्वर की शिक्षा, यीशु की शिक्षाओं के दिव्य सिद्धांत, और प्रेम के इस तुच्छ अर्थ को मनुष्य की आत्मा, के नियम, और मृत्यु के नियम से मनुष्य की मृत्यु के रूप में समझने की कोशिश की। ईश्वरीय प्रेम का नियम।

### 3. 259 : 6-14

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

#### 4. 25 : 13-31

यीशु ने प्रदर्शन के द्वारा जीवन का मार्ग सिखाया, कि हम समझ सकते हैं कि यह दिव्य सिद्धांत कैसे बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को जन्म देता है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। यीशु ने ईश्वर के आदर्श को किसी भी ऐसे व्यक्ति की तुलना में बेहतर प्रस्तुत किया जिसकी उत्पत्ति कम आध्यात्मिक थी। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के द्वारा, उसने आध्यात्मिक रूप से सभी दूसरों के सिद्धांत का प्रदर्शन किया। अतः उसके पालन की शक्ति, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

यद्यपि पाप और बीमारी पर अपने नियंत्रण का प्रदर्शन, किसी भी तरह से महान शिक्षक ने दूसरों को अपने स्वयं के पवित्रता के अपेक्षित प्रमाण देने से राहत नहीं दी। उन्होंने उनके मार्गदर्शन के लिए काम किया, ताकि वे इस शक्ति का प्रदर्शन कर सकें, जैसा कि उन्होंने किया और इसके दिव्य सिद्धांत को समझा। शिक्षक के प्रति विश्वास और सभी भावनात्मक प्रेम हम उस पर पूरा कर सकते हैं, कभी भी हमें उसका अनुकरण करने वाला नहीं बनाएंगे। हमें इसी तरह से जाना चाहिए और करना चाहिए, अन्यथा हम उन महान आशीषों में सुधार नहीं कर रहे हैं जो हमारे मास्टर ने काम किया था और हमारे लिए सबसे अच्छा था। मसीह की दिव्यता को यीशु की मानवता में प्रकट किया गया था।

#### 5. 28 : 9-14

चर्च में या उससे बाहर के सभी अच्छे लोगों का सम्मान करते हुए, मसीह के लिए किसी की प्रतिष्ठा पेशे की तुलना में प्रदर्शन के आधार पर अधिक है। अंतरात्मा की आवाज में, हम विश्वासों को पकड़ नहीं सकते हैं; और मृत्युहीन मसीह के दिव्य सिद्धांत को और अधिक समझने के द्वारा, हम बीमारों को चंगा करने और पाप पर विजय प्राप्त करने के लिए सक्षम हैं।

#### 6. 31: 12-22 (से.)

सबसे पहले ईसाई कर्तव्यों की सूची में, उन्होंने अपने अनुयायियों को सत्य और प्रेम की उपचार शक्ति सिखाई। उन्होंने मृत समारोहों के लिए कोई महत्व नहीं दिया। यह जीवित मसीह है, व्यावहारिक सत्य है, जो यीशु को उन सभी लोगों के लिए "पुनरुत्थान और जीवन" बनाता है जो उसे विलेख में पालन करते हैं। उनकी कीमती उपदेशों का पालन करते हुए, — उनके प्रदर्शन के बाद अब तक हम इसे स्वीकार करते हैं, — हम उसके प्याले को पीते हैं, हम उसकी रोटी का हिस्सा बनाते हैं, उसकी पवित्रता से बपतिस्मा लेते हैं: और अंत में हम मृत्यु के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले दिव्य सिद्धांत की पूर्ण समझ में, उसके साथ बैठेंगे।

## 7. 458 : 25 (यह)-8

क्रिश्चियन साइंटिस्ट बुद्धिमानी से अपने पाठ्यक्रम को आकार देते हैं, और ईश्वरीय मन की अग्रणी का अनुसरण करने में ईमानदार और सुसंगत हैं। उसे जीवित रहने के साथ-साथ उपचार और शिक्षा के माध्यम से साबित करना होगा कि मसीह का मार्ग एकमात्र ऐसा है जिसके द्वारा नश्वर लोगों को पाप और बीमारी से बचाया जाता है।

जैसा कि फूल अंधकार से प्रकाश की ओर जाता है, ईसाई धर्म पुरुषों को आत्मा से पदार्थ की ओर मुड़ने का कारण बनता है। मनुष्य फिर उन चीजों को नियुक्त करता है जो “आँख ने देखा नहीं और न ही कानों ने सुना।” पॉल और जॉन को स्पष्ट आशंका थी कि नश्वर मनुष्य बलिदान के बिना सांसारिक सम्मान प्राप्त नहीं करता है, उसी तरह उसे सारी दुनिया को त्यागकर स्वर्गीय धन प्राप्त करना चाहिए। तब उसके पास दुनियादारी के उद्देश्य, उद्देश्य और साधन के साथ कुछ भी सामान्य नहीं होगा।

## 8. 183 : 21-29

डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

सत्य वास्तविक आध्यात्मिक कानून के साथ सभी बुराइयों और भौतिकवादी तरीकों को निकालता है, — वह कानून जो अंधे को दृष्टि देता है, बहरे को सुनता है, गूंगे को आवाज देता है, पैर को लंगड़ा करता है।

## 9. 149 : 11-16

नियम और संचालन की पूर्णता विज्ञान में कभी भिन्न नहीं होती है। यदि आप किसी भी मामले में सफल नहीं हो पाते हैं, तो इसका कारण यह है कि आपने अपने जीवन में मसीह, सत्य के जीवन का प्रदर्शन नहीं किया है, — क्योंकि आपने नियम का पालन नहीं किया है और ईश्वरीय विज्ञान के सिद्धांत को सिद्ध किया है।

## 10. 19 : 17-28

पश्चाताप और पीड़ा के हर दर्द, सुधार के लिए हर प्रयास, हर अच्छा विचार और काम, हमें पाप के लिए यीशु के प्रायश्चित्त को समझने और उसकी प्रभावकारिता की सहायता करने में मदद करेगा; लेकिन अगर पापी प्रार्थना और पश्चाताप करना, पाप करना और क्षमा करना जारी रखता है, तो उसके पास प्रायश्चित्त में बहुत कम हिस्सा है, — परमेश्वर के साथ एकता में, - क्योंकि उसके पास व्यावहारिक पश्चाताप का अभाव है, जो हृदय को सुधारता है और मनुष्य को ज्ञान की इच्छा करने में सक्षम बनाता है। जो लोग प्रदर्शन नहीं कर सकते, कम से कम भाग में, हमारे गुरु की शिक्षाओं और अभ्यास के दिव्य सिद्धांत का भगवान में कोई हिस्सा नहीं है। यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

## 11. 21 : 1-5, 9-14

यदि सत्य आपके दैनिक चलने और वार्तालाप में त्रुटि पर काबू पा रहा है, तो आप अंततः कह सकते हैं, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ .... मैं ने विश्वास की रखवाली की है।" क्योंकि आप एक बेहतर इंसान हैं। यह सत्य और प्रेम के साथ एक-में-भाग में हमारा हिस्सा है।

यदि शिष्य आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ रहा है, तो वह अंदर प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है। वह भौतिक दृष्टि से लगातार दूर होता जाता है, और आत्मा की अपूर्ण चीजों की ओर देखता है यदि वह ईमानदार है, तो वह शुरू से ही सबसे अधिक लाभ में रहेगा, और जब तक वह खुशी के साथ अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेता, तब तक वह हर दिन सही दिशा में थोड़ा-थोड़ा हासिल करेगा।

### दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

### दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

### उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

## चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

### कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

## चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6